पत्रकारिता के विविध आयाम

- डा॰यशोधरा राठौर

पत्रिकाएं साहित्य के विभिन्न विधाओं की जन्मदात्री रही हैं I राष्ट्र के सभी आंदोलनों को पत्रिकाओं ने ही सशक्त किया है l देश की आकांक्षा , विचारों और प्रेरणा की वाहिका के रूप में पत्रिकाओं ने हिंदी को राष्ट्रवादी स्वरूप प्रदान किया l हिंदी के गद्य काल में ही निबंध ,जीवनी आत्मकथा ,यात्रा वृतांत ,गद्य गीत संस्मरण, रेखा चित्र ,रिपोतार्ज, डायरी आलोचना ,समालोचना ,समीक्षा, भेंटवार्ता ,पत्र साहित्य आदि विधाएं पल्लवित और पुष्पित हुई ,जिनके उनायक पत्रकार ही थे जो बाद में उत्कृष्ट साहित्यकार भी हुए। भारतीय जनता की विचार ,अभिव्यक्ति बौद्धिक विकास, सुदृढ़ व्यवस्थित तथा परिमार्जित भाषा का निर्माण एवं समृद्ध साहित्य का सृजन पत्रकारों ने ही किया ।"कवि वचन सुधा और सरस्वती"ने हिंदी जगत की जो सेवा की वह स्वर्ण अक्षरों में उल्लेखनीय हैl भारतेंदु एवं द्विवेदी सदृश पत्रकार यदि ना होते तो बालकृष्णभट्ट ,प्रताप नारायण मिश्र, बाबूरावविष्णुपराड़कर, शिवपूजन सहाय ,प्रेमचंद, निराला, पंडित , नाथूराम शंकर मैथिलीशरण गुप्त ,गोपाल शरण सिंह मुकुटधर पांडे वृंदावनलालवर्मा,पद्मश्रीशर्मा राहुलसांस्कृतआयन ,भगवतशरण उपाध्याय कन्हैयालाल मिश्र जैसे सैकड़ों साहित्यकार हिंदी जगत को नहीं मिल पाते । सच तो यह है समस्त विधाओं को गतिशील बनाने का उत्तरदायित्व पत्रकारों ने हीं निभाया है। श्री हेरंब मिश्र के अनुसार-
"सर्वोत्तम पत्रकारिता साहित्य है और सर्वोत्तम साहित्य पत्रकारिता है "।

वस्तुतः जनता में साहित्यिक चेतना जगाने का श्रेय एवं युगीन भाव बोध के साथ भाषा का आंदोलन पत्रकारिता से ही प्रारंभ हुआ । भाषा के आदर्श रूप को स्थिर करने एवं लोक रुचि का परिष्कार करने में साहित्यिक पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा कि-
जिस प्यारी हिंदी को देश ने अपनी विभूति समझा, जिसको जनता ने उत्कंठा पूर्वक दौड़कर अपनाया उसका दर्शन हरिश्चंद्र चंद्रिका में ही किया जा सकता है ।

दरअसल, समाज के विचारों और साहित्य के समवाहिका का नाम ही पत्रकारिता है जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना एक स्थान तो बना ही लेती है उसका निर्माण भी करती है। अंग्रेजों के शासन के कोप का भाजन बनकर पत्रिकाओं ने ही एक दिशा दी । समाज "कवि वचन सुधा, हिंदी प्रदीप, यंग इंडिया, हरिजन सरस्वती, आज, सुदेश, कर्मभूमि ,सेनापति जैसे असंख्य पत्रों ने भारतीय जनमानस की चेतना को गहन रूप से प्रभावित किया।
"लेकर पूर्ण स्वराज सत्त्व अपना पहचाने , आजादी या मौत यही प्रण मन में ठाने"
बरनार्ड शा ने कहा था "कुशल पत्रकार साहित्यकार से भिन्न नहीं होता । अगर साहित्य का काम संसार को ठीक-ठाक देखना और परखना है तो पत्रकारिता का काम इससे अलग नहीं है"
पत्रकारिता के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि

" समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छा विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक कमियों दोषों को निर्भयता पूर्वक प्रकट करना है"

अंग्रेजी पत्रकार कटलीप ने कहा है कि-
"द न्यूज़पेपर इज द मूविंग फोर्स ऑफ करंट हिस्ट्री" वस्तुतः सत्य का संचयन विवेचन और प्रकाशन ही पत्रकारिता है जिसे पत्रकार विचारों की समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द ध्वनि और चित्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाता है ।यहां यह उल्लेखनीय है की आज जीवन विविधताओं से भर गया हैऔर नित नूतन साधनों की प्रचुरता के कारण पत्रकारिता बहुआयामी बन गयी ईहै l आज पत्रकार अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुरूप अपने लिए विशेष क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं, क्योंकि आज का युग विशिष्टीकरण (स्पेशलाइजेशन) का युग है।

वर्तमान युग को यदि हम पत्रकारिता का युग कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जनमत तैयार करने से जागरूकता फैलाने तक पत्रकारिता ही समाज को दिशा प्रदान करती है ।यद्यपि पत्रकारिता का यह कार्य तलवार की धार पर चलने जैसा कठिन है-
खींचो ना कमानो को न तलवार निकालो जब तोप मुकाबिल हो , अखबार निकालो

जाहिर है कि किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए पत्रकारिता संविधान के चौथे स्तंभ का स्थान लेती है। राष्ट्रीय चेतना का संवाहक बनकर यह आमजनों में निर्भीकता, स्वतंत्रता एवं स्पष्टवादिता का संचार करती है ।हमारे मानसिक ,बौद्धिक सामाजिक एवं सर्वांगीण विकास के लिए यह नितांत आवश्यक एवं उद्देश्य पूर्ण है । इसका प्रमुख एवं आवश्यक सिद्धांत निष्पक्षता है। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोकतंत्र के रक्षार्थ यह सत्ता एवं जनता के बीच की कड़ी है, इसलिए राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन में इसकी अहम भूमिका है। इसका सबसे प्रमुख सिद्धांत है निष्पक्ष होकर न्याय का साथ देना। पत्रकारिता का इतिहास बेशक पुराना है ,परंतु 21वीं शताब्दी में इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया , जिसमें आवश्यक विविधतायें भी समाहित हो गईं। उल्लेखनीय है कि आज का जीवन विविधताओं से भरा है और नित्य नूतन साधनों की प्रचुरता के कारण पत्रकारिता बहुआयामी बन चुकी है । आज पत्रकार अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुरूप अपने लिए विशेष क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं ,क्योंकि आज का युग स्पेशलाइजेशन का युग है जिसमें क्षेत्र विशेष का अलग -अलग महत्व है ।अतः पत्रकारिता के विविध आयामों की आवश्यकता महसूस किया जाना स्वाभाविक है। पत्रकारिता के निम्नांकित आयामों का संक्षिप्त विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है-

1. व्याख्यात्मक पत्रकारिता
2. विकास पत्रकारिता
3. आर्थिक पत्रकारिता
4. खेल पत्रकारिता

5. ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता
6. संसदीय पत्रकारिता
7. विधि पत्रकारिता
8. विज्ञान पत्रकारिता
9. शैक्षणिक पत्रकारिता
10. सांस्कृतिक पत्रकारिता
11. साहित्यिक पत्रकारिता
12. अनुसंधानात्मक पत्रकारिता
13. संदर्भ पत्रकारिता
14. वृत्तांत पत्रकारिता
15. रेडियो पत्रकारिता
16. टेलीविजन पत्रकारिता
17. फोटो पत्रकारिता
18. सर्वोदय पत्रकारिता
19. पीत पत्रकारिता
20. एडवोकेसी पत्रकारिता
21. साहित्यिक पत्रकारिता
22. राजनीतिक पत्रकारिता
23. खोजी पत्रकारिता
24. बाल पत्रकारिता
25. पेज 3 पत्रकारिता आदि

1. व्याख्यात्मक पत्रकारिता

किसी भी समाचार का विश्लेषण उसकी पृष्ठभूमि तथा उसके भावी परिणामों का दिशा -निर्देश करने की समस्या का निदान व्याख्यात्मक पत्रकारिता के द्वारा होता है । समाचारों के यथार्थ परिवेश और उनके सत्यापन का मूल्यांकन करना ही इस पत्रकारिता का लक्ष्य है । द्रुतगामी संचार साधनों से प्राप्त समाचारों विकास पत्रकारिता के विस्तार और उसके स्पष्टीकरण के लिए व्याख्यात्मक पत्रकारिता ही श्रेष्ठ है।

2. विकास पत्रकारिता

इस पत्रकारिता के अंतर्गत सरकारी ,गैर सरकारी विभिन्न योजनाओं, विकास कार्यक्रमों तकनीकी अभिवृद्धि आदि समाहित हैं लेकिनमूलतःयहसामाजिक ,आर्थिक ,वैज्ञानिक प्राविधिक संबंधी समग्र विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती है ,जिसके अंतर्गत कभी-कभी सनसनीखेज, योजनाओं की गड़बड़ी और भारी-भरकम गोलमाल भी आ जाते हैं। इसमें भ्रष्टाचार और गबन के मामले भी

शामिल हैं। केंद्र और प्रांतीय -सरकारें अपने विकास कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाने के लिए इसी पत्रकारिता का सहारा लेती हैं।

3. आर्थिक पत्रकारिता

आज जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अर्थ से प्रभावित होकर ही संचालित है। पूरी दुनिया अर्थ उपार्जन के पीछे चल रही है। इसी कालरण अर्थ से संबंधित समस्त क्रियाकलापों को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्रकारिता विकसित की गई है । मुद्रा बाजार, पूंजी बाजार, वस्तु बाजार, बैंक पंचवर्षीय योजनाएं, ग्राम उद्योग श्रम बजट और राष्ट्रीय आय के तमाम समाचार पाठकों के लिए आज आकर्षक एवं महत्वपूर्ण बन गए हैं।

द इकोनॉमिक टाइम्स, दैनिक अकोला बाजार ,व्यापार -भारती फाइनेंशियल एक्सप्रेस जैसे महत्वपूर्ण पत्रों के द्वारा केवल उद्योग और व्यवसाय की जानकारी दी जा रही है। अर्थशास्त्र, वाणिज्य और तकनीकी ज्ञान वाले इस पत्रकारिता से लाभ उठा रहे हैं अत: इस प्रकार
की पत्रकारिता की विशेष महत्व को समझा जा सकता है।

4. खेल पत्रकारिता

राष्ट्रीय ,अंतरराष्ट्रीय, राज्य स्तरीय, क्षेत्रीय खेलों का चल संवाद या संवाद का निष्पक्ष समीक्षात्मक विश्लेषण ही खेल पत्रकारिता है।आज सभी पत्रों में ,दैनिकों में खेल समाचारों का अलग कॉलम होता है, जिसमें विभिन्न खेलों से संबंधित सूचनाएं निर्गत की जाती हैं। ये सूचनाएं दो प्रकार से अग्रिम (एडवांस)और चल (रनिंग)इन दोनों ही प्रकार के संवादों में लिखी जाती हैं ।अमुक खेल में शामिल होने वाली टीमें, खिलाड़ियों के नाम खेल व्यवस्था एवं खेल विशेष की पृष्ठभूमि के सहारे अग्रिम संवाद की रचना की जाती है। एक योग्य खेल संपादक या लेखक तथ्यों, टिप्पणियों अलंकारिक युक्तियों आदि को आकर्षक शैली में प्रस्तुत कर अपने समाचार को प्रभावशाली बना सकता है । क्रिकेट सम्राट , खेल-खिलाड़ी , स्पोर्ट्स वीक, खेल युग आदि पत्रिकाओं ने खेल पत्रकारिता की जगत को आगे बढ़ाया है।

5. ग्रामीण पत्रकारिता

हमें ज्ञात है कि भारत गांवों का देश है परंतु अनेकों प्रयास के बाद गांव अभी भी पिछड़े हैं । अतः गांव में नवीन चेतना और वैज्ञानिक विकास के स्वरों को पत्रकारिता द्वारा ही पहुंचाया जाता है । परंपरागत लोक कला, कृषि उद्योग ,लोक संस्कृति के प्रचार, कुटीर उद्योग ,ग्रामीण स्वास्थ्य हरित और श्वेत क्रांति गांवों के समग्र विकास के लिए पत्रकारिता एक सहायक की तरह कार्य करती है। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने कहां है कि -

"राष्ट्र का मंगल और उसकी जड़े उस समय तक मजबूत नहीं हो सकती जब तक के अनगिनत लहलहाते पौधों की जड़ों को जीवन के जल से सींचा नहीं जाता।"

इस दृष्टि से ग्रामीण पत्रकारिता के महत्व को आंका जा सकता है।